IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 22, Issue 4, Ver. 1 (April. 2017) PP 79-84
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 'गैर-हिंसक आंदोलनों' के समानांतर चलने वाले हिंसक संघर्ष

डॉ शलभ चिकारा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज,(दिल्ली विश्वविद्यालय) अलीपुर, दिल्ली

सार

भारत का स्वतंत्रता संग्राम सिर्फ अहिंसक आंदोलनों से ही नहीं, बल्कि हिंसक संघर्षों से भी प्रेरित था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसक आंदोलनों ने व्यापक समर्थन प्राप्त किया, लेकिन इस दौरान कुछ क्रांतिकारी आंदोलनों ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ देने के लिए हिंसक संघर्षों को अपनाया। भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद और उनके साथियों द्वारा किए गए हिंसक प्रयासों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक अलग प्रभाव छोड़ा। इस लेख में हम इन हिंसक संघर्षों का विश्लेषण करेंगे, उनके महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन से संबंध को समझेंगे और उनके ऐतिहासिक महत्व और प्रभाव पर चर्चा करेंगे।

परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने एक विशाल और विविध इतिहास को समेटा है, जिसमें विभिन्न आंदोलनों और संघर्षों ने देश को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस संग्राम में महात्मा गांधी का अहिंसात्मक आंदोलन एक प्रमुख धारा के रूप में सामने आया, जिसने भारतीयों को सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा, और अहिंसा के सिद्धांतों के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष करने की प्रेरणा दी। हालांकि, गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन के समानांतर कुछ क्रांतिकारी विचारक और नेता सशस्त्र संघर्षों और हिंसक गतिविधियों के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में काम कर रहे थे। इन आंदोलनों के प्रमुख नेताओं में भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सुखदेव, और राजगुरु जैसे क्रांतिकारी शामिल थे, जिन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ अपनी जान की बाजी लगाकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी।

यह लेख इन हिंसक आंदोलनों और उनके नेताओं के योगदान, महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन के साथ उनके संबंधों, और इन संघर्षों के ऐतिहासिक महत्व पर आधारित है। इस लेख में हम देखेंगे कि कैसे इन दोनों आंदोलनों के विचार और कार्यक्षेत्र अलग थे, फिर भी दोनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी अलग-अलग भूमिका निभाई। हम यह भी समझने की कोशिश करेंगे कि आज के समय में इन आंदोलनों का क्या महत्व है और वे हमें कौन सी शिक्षा देते हैं।

भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद के प्रयास

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद का योगदान न केवल उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण महत्वपूर्ण है, बल्कि उनके विचार और दृष्टिकोण भी भारतीय राजनीति और स्वतंत्रता संग्राम को एक नया दिशा देने वाले थे। दोनों क्रांतिकारी नेताओं ने न केवल ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष को अपनाया, बल्कि उन्होंने भारतीय युवाओं को जागरूक किया और उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को हुआ था। उनका जीवन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। वे एक युवा क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अहिंसा के बजाय सशस्त्र क्रांति को स्वतंत्रता प्राप्ति का रास्ता माना। उनका मानना था कि जब तक ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष नहीं किया जाएगा, तब तक वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती। 1929 में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने दिल्ली में केंद्रीय असेंबली में बम फेंका। यह बम कांड ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विरोध प्रकट करने का एक क्रांतिकारी तरीका था। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि इस हमले में

किसी की मौत न हो, क्योंकि उनका उद्देश्य सिर्फ ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विरोध जताना था। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बाद में अपनी गिरफ्तारी स्वीकार की और अदालत में इस कृत्य को सही ठहराया, जिससे उनके विचारों और संघर्ष को राष्ट्रीय स्तर पर अधिक महत्व मिला। भगत सिंह ने 23 मार्च 1931 को शहीद हो गए, लेकिन उनका संघर्ष और विचार आज भी भारतीय राजनीति और इतिहास में जीवित हैं। उनकी शहादत ने भारतीय युवाओं को प्रेरित किया और स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी गतिविधियों को एक नई दिशा दी। भगत सिंह के विचारों को पढ़ने और समझने के लिए कई इतिहासकारों ने इसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक क्रांतिकारी मोड़ के रूप में देखा है।

चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को हुआ था। वह भगत सिंह और अन्य क्रांतिकारियों के समकालीन थे और उनके संघर्षों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चंद्रशेखर आज़ाद ने अपनी युवावस्था में ही स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (HSRA) का हिस्सा बने। चंद्रशेखर आज़ाद का नाम काकोरी कांड से जुड़ा हुआ है, जिसमें उन्होंने और उनके साथियों ने ब्रिटिश सरकार की मुद्रा से भरी एक ट्रेन को लूट लिया था। यह घटना 9 अगस्त 1925 को हुई थी और इसे ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ एक सशस्त्र संघर्ष के रूप में देखा जाता है। इस घटना ने ब्रिटिश शासन को झकझोर दिया और भारतीय क्रांतिकारियों की शक्ति का अहसास कराया। चंद्रशेखर आज़ाद का आदर्श था कि ब्रिटिश साम्राज्य का खात्मा केवल सशस्त्र संघर्ष से ही हो सकता है। वह महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन से अलग थे, और उनका मानना था कि भारतीयों को अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपनी ताकत और शौर्य को सामने लाना होगा। उनका प्रसिद्ध कथन था, "अगर मुझे अपनी जीवन की एक घड़ी बचानी हो तो मैं उसे क्रांति के लिए खर्च कर दूंगा।" चंद्रशेखर आज़ाद ने 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में आत्मसमर्पण करने के बजाय अंग्रेजों से मुकाबला करते हुए अपनी शहादत दी। उनकी शहादत भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन की एक प्रेरणास्त्रोत घटना बन गई और आज भी उनके योगदान को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण माना जाता है। भगत सिंह और चंद्रशेखर आज़ाद के संघर्षों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा दी। उनके विचार और कार्यों ने भारतीय युवाओं को एक नया दृष्टिकोण दिया और यह दिखाया कि स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक संघर्ष किया जा सकता है। इन दोनों नेताओं की शहादत ने भारतीय समाज में स्वतंत्रता की महत्वता को और अधिक प्रबल किया और भारतीय क्रांतिकारियों के संघर्षों को एक ऐतिहासिक आयाम दिया। इन दोनों क्रांतिकारियों के प्रयासों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को केवल अहिंसक संघर्ष से ही नहीं, बल्कि सशस्त्र संघर्षों के माध्यम से भी समृद्ध किया। उनके योगदान को नकारा नहीं जा सकता, और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका हमेशा याद रखी जाएगी।

महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन और हिंसक आंदोलनों के बीच संबंध

महात्मा गांधी का अहिंसात्मक आंदोलन और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिंसक आंदोलनों का विकास भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण विषय है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधी ने अहिंसा और सत्याग्रह को अपना मुख्य हथियार बनाया, जबकि कुछ क्रांतिकारी नेताओं ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष को अपनाया। दोनों आंदोलनों का उद्देश्य स्वतंत्रता था, लेकिन उनके तरीके और दृष्टिकोण में बुनियादी अंतर था। इस संबंध को समझने के लिए हमें दोनों आंदोलनों के उद्देश्यों, विचारधाराओं और उनके प्रभावों पर ध्यान देना होगा। महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक नई दिशा दी, जब उन्होंने अहिंसा (non-violence) और सत्याग्रह (satyagraha) के सिद्धांतों को आधार बनाकर भारतीय समाज को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। गांधी का मानना था कि भारत को अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए शांति और अहिंसा के मार्ग का पालन करना होगा। उनका विश्वास था कि हिंसा केवल विनाश लाती है, जबकि अहिंसा से सत्य की विजय होती है।

गांधी का अहिंसात्मक आंदोलन भारत की जनसंख्या को एकजुट करने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास था। इस आंदोलन के मुख्य अंग थे: गांधी ने सत्याग्रह को एक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें नागरिक अपने अधिकारों के लिए बिना किसी हिंसा के संघर्ष करते थे। नमक सत्याग्रह (1930): गांधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ नमक कर को चुनौती देने के लिए नमक सत्याग्रह का आयोजन किया। यह आंदोलन भारत के आम लोगों से जुड़ा था और इसमें लाखों भारतीयों ने भाग लिया। भारत छोड़ो आंदोलन (1942): यह गांधी का अंतिम बड़ा आंदोलन था, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश शासन से तत्काल भारतीय स्वतंत्रता की मांग की। इस आंदोलन में अहिंसा के सिद्धांतों को मजबूती से लागू किया गया।

गांधी का मानना था कि अहिंसात्मक संघर्ष से ही ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाया जा सकता है। उनके अनुसार, अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचने का नाम नहीं था, बल्कि यह आत्मबल और मानसिक शांति का भी प्रतीक था।

महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन के समानांतर कुछ क्रांतिकारी नेता थे जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष को अपनाया। इन आंदोलनों का उद्देश्य था ब्रिटिश शासन को किसी भी प्रकार की प्रत्यक्ष हिंसा से चुनौती देना। भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस और अन्य क्रांतिकारियों ने अहिंसा के सिद्धांत को अस्वीकार करते हुए सशस्त्र विद्रोह को स्वतंत्रता प्राप्ति का मार्ग माना। काकोरी कांड (1925): चंद्रशेखर आज़ाद और उनके साथियों ने काकोरी में ब्रिटिश प्रशासन की कोषागार से पैसे लूटने के लिए एक ट्रेन को लूटा। यह घटना ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक सशस्त्र प्रतिरोध का प्रतीक बनी। भगत सिंह का बम कांड (1929): भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय असेंबली में बम फेंका, जिससे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विरोध का संकेत मिला। इस कांड में किसी की जान नहीं ली गई, लेकिन यह क्रांतिकारी सोच को प्रकट करने का एक तरीका था। इन क्रांतिकारियों का मानना था कि जब तक ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ कोई सशस्त्र संघर्ष नहीं होगा, तब तक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकती। उनके लिए, गांधी का अहिंसात्मक आंदोलन एक धीमा और अव्यवहारिक तरीका था, जबकि सशस्त्र संघर्ष से तत्काल प्रभाव देखा जा सकता था। महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन और हिंसक आंदोलनों के बीच संबंध जटिल था। हालांकि दोनों आंदोलनों का उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य को हराना था, लेकिन उनके तरीके पूरी तरह से भिन्न थे। गांधी का आंदोलन मुख्य रूप से जनता के व्यापक समर्थन पर आधारित था और उसने भारत के हर नागरिक को संघर्ष में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। दूसरी ओर, हिंसक आंदोलनों ने कम संख्या में युवाओं को शामिल किया, जो खुद को स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए तैयार महसूस करते थे।

गांधी का मानना था कि हिंसा से न केवल ब्रिटिश साम्राज्य को हराया जा सकता है, बल्कि यह समाज में नफरत और अशांति भी फैलाता है। उनका विश्वास था कि अहिंसा से भारतीय समाज की सच्ची शक्ति जागृत होगी। जबकि क्रांतिकारी नेताओं का मानना था कि अहिंसा से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त नहीं किया जा सकता और उन्होंने सशस्त्र संघर्ष के रास्ते को चुना। हालांकि गांधी और क्रांतिकारियों के बीच दृष्टिकोण में भिन्नता थी, लेकिन दोनों आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ दिया। गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन ने भारतीय समाज को एकजुट किया और आत्मनिर्भरता की भावना पैदा की, जबकि हिंसक आंदोलनों ने ब्रिटिश साम्राज्य को वास्तविक खतरे का अहसास दिलाया।

राष्ट्रवाद और महात्मा गांधी का योगदान

राष्ट्रवाद को इतिहास में प्रमुख व्यक्तियों के साथ जोड़कर देखा जाता है, जिनके नेतृत्व ने राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदाहरण के लिए, इटली के निर्माण से गैरीबाल्डी को, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम से जॉर्ज वॉशिंगटन को, और वियतनाम को औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराने के संघर्ष से हो ची मिन्ह को जोड़ा जाता है। इसी प्रकार, महात्मा गांधी को भारतीय राष्ट्र का 'पिता' माना जाता है।

चूंकि गांधी जी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले सभी नेताओं में सर्वाधिक प्रभावशाली और सम्मानित रहे हैं, उन्हें इस उपाधि से सम्मानित किया गया। हालांकि, वॉशिंगटन या हो ची मिन्ह की तरह गांधी जी का राजनीतिक जीवन उस समाज ने ही सँवारा और उन्हें महान नेता के रूप में स्थापित किया, जिसमें वे रहते थे। कोई व्यक्ति चाहे कितना ही महान क्यों न हो, वह केवल इतिहास नहीं बनाता, बल्कि समाज भी उसे इतिहास बना देता है। इस अध्ययन में 1915-1948 के बीच महात्मा गांधी की गतिविधियों का विश्लेषण किया गया है। भारतीय समाज के विभिन्न हिस्सों, उनके संपर्कों, और उन द्वारा प्रेरित तथा नेतृत्व किए गए लोकप्रिय संघर्षों की छानबीन की गई है। इस अध्ययन में उन अलिखित और अनूठे प्रकार के दृष्टिकोणों को भी रखा गया है, जिन्हें इतिहासकारों ने गांधी जी के जीवन-वृत्त और उन सामाजिक आंदोलनों के पुनर्निर्माण में किया, जिनसे वे जुड़े रहे। महात्मा गांधी जनवरी 1915 में दो दशकों बाद अपनी गृहभूमि भारत लौटे। इन वर्षों का अधिकांश हिस्सा उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में बिताया। यहाँ वे वकील के रूप में गए थे और बाद में भारतीय समुदाय के नेता बन गए। जैसा कि इतिहासकार चंद्रन देवनेसन ने टिप्पणी की है, दक्षिण अफ्रीका ने ही गांधी जी को 'महात्मा' बनाया। यहाँ ही गांधी जी ने सत्याग्रह के रूप में अहिंसात्मक विरोध की अपनी विशिष्ट तकनीक का इस्तेमाल किया, विभिन्न धर्मों के बीच सौहार्द बढ़ाने का प्रयास किया और उच्च जातीय भारतीयों को निम्न जातियों और महिलाओं के प्रति भेदभाव वाले व्यवहार के लिए चेतावनी दी।

1915 में जब गांधी जी भारत लौटे, तो भारत का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य 1893 में उनकी विदाई के समय से काफी बदल चुका था। यह अब भी ब्रिटिश उपनिवेश था, लेकिन अब यह राजनीतिक दृष्टि से कहीं अधिक सक्रिय हो गया था। अधिकांश प्रमुख शहरों और कस्बों में अब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखाएँ थीं। 1905-07 के स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से इसने व्यापक रूप से मध्य वर्गों के बीच अपनी अपील का विस्तार कर लिया था। इस आंदोलन ने कई प्रमुख नेताओं को जन्म दिया, जिनमें महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक, बंगाल के विपिन चंद्र पाल, और पंजाब के लाला लाजपत राय थे। ये तीनों 'लाल, बाल और पाल' के रूप में प्रसिद्ध थे। उनका यह समूह संघर्ष के अखिल भारतीय चरित्र को दर्शाता था, क्योंकि ये तीनों अपने-अपने क्षेत्र से बहुत दूर थे। इन नेताओं ने जहां औपनिवेशिक शासन के प्रति विरोध का समर्थन किया, वहीं 'उदारवादियों' का एक समूह था जो एक सुधारात्मक और निरंतर प्रयास करने के विचार का हिमायती था। इन उदारवादियों में गांधी जी के मान्य राजनीतिक परामर्शदाता गोपाल कृष्ण गोखले और मोहम्मद अली जिन्ना भी थे, जो गांधी जी की ही तरह गुजराती मूल के थे और लंदन में प्रशिक्षित वकील थे।गोखले ने गांधी जी को एक वर्ष तक ब्रिटिश भारत की यात्रा करने की सलाह दी, ताकि वे इस भूमि और यहाँ के लोगों को जान सकें। उनकी पहली महत्वपूर्ण सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में हुई। इस समारोह में आमंत्रित व्यक्तियों में वे राजा और मानव प्रेमी थे, जिनके द्वारा दिए गए दान ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना में योगदान दिया। समारोह में एनी बेसेंट जैसे कांग्रेस के कुछ महत्वपूर्ण नेता भी उपस्थित थे। इन प्रतिष्ठित व्यक्तियों के मुकाबले गांधी जी अपेक्षाकृत अज्ञात थे। उन्हें यहाँ भारत में उनकी प्रतिष्ठा के कारण नहीं, बल्कि दक्षिण अफ्रीका में उनके द्वारा किए गए कार्यों के आधार पर आमंत्रित किया गया था।

जब गांधी जी की बोलने की बारी आई, तो उन्होंने मशहूर गरीबों की ओर ध्यान न देने के कारण भारतीय विशिष्ट वर्ग को आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना 'निश्चित ही अत्यंत शानदार' है, लेकिन उन्होंने वहाँ धनी और सजे-धजे भद्रजनों की उपस्थिति और 'लाखों गरीब' भारतीयों की अनुपस्थिति के बीच की विषमता पर अपनी चिंता व्यक्त की। गांधी जी ने विशेष सुविधा प्राप्त आमंत्रितों से कहा, 'भारत के लिए मुक्ति तब तक संभव नहीं है जब तक आप अपने को इन अलंकरणों से मुक्त न कर लें और इन्हें भारत के अपने हमवतनों की भलाई में न लगा दें।' वे कहते गए, 'हमारे लिए स्वशासन का तब तक कोई अभिप्राय नहीं है जब तक हम किसानों से उनके श्रम का लगभग सम्पूर्ण लाभ स्वयं अथवा अन्य लोगों को ले लेने की अनुमति देते रहेंगे। हमारी मुक्ति केवल किसानों के माध्यम से ही हो सकती है। न तो वकील, न डॉक्टर, न ही शमिंदार इसे सुरक्षित रख सकते हैं।'

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना एक उत्सव का अवसर था, क्योंकि यह भारतीय धन और भारतीय प्रयासों से संभव हुआ और एक राष्ट्रवादी विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रतीक था। लेकिन गांधी जी ने स्वयं को बधाई देने के बजाय लोगों को उन किसानों और कामगारों की याद दिलाना चुना, जो भारतीय जनसंख्या के अधिकांश हिस्से का निर्माण करते हुए भी वहाँ श्रोताओं में अनुपस्थित थे।

एक दृष्टि से फरवरी 1916 में बनारस में गांधी जी का भाषण वास्तविक तथ्य का उद्घाटन था, अर्थात भारतीय राष्ट्रवाद वकीलों, डॉक्टरों और शमिंदारों जैसे विशिष्ट वर्गों द्वारा निर्मित था। लेकिन दूसरी दृष्टि से यह वक्तव्य उनकी मंशा भी जाहिर करता था। यह भारतीय राष्ट्रवाद को सम्पूर्ण भारतीय लोगों का और अधिक अच्छे ढंग से प्रतिनिधित्व करने में सक्षम बनाने की गांधी जी की स्वयं की इच्छा की पहली सार्वजनिक उद्घोषणा थी।

उसी वर्ष के अंतिम माह में गांधी जी को अपने नियमों को व्यवहार में लाने का अवसर मिला। दिसम्बर 1916 में लखनऊ में हुई वार्षिक कांग्रेस में बिहार के चंपारण से आए एक किसान ने उन्हें वहाँ अंग्रेजी नील उत्पादकों द्वारा किसानों के प्रति किए जाने वाले कठोर व्यवहार के बारे में बताया।

खिलाफत आंदोलन

खिलाफत आंदोलन (1919-1920) मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में भारतीय मुसलमानों का एक आंदोलन था। इस आंदोलन की निम्नलिखित मांगें थीं:

1. ऑटोमन साम्राज्य के सभी इस्लामी पवित्र स्थानों पर तुर्की सुलतान अथवा खलीफा का नियंत्रण बना रहे।

2. जशीरात-उल-अरब (अरब, सीरिया, इराक, फिलिस्तीन) इस्लामी सम्प्रभुता के अधीन रहें।
3. खलीफा के पास इतने क्षेत्र हों कि वह इस्लामी विश्वास को सुरक्षित करने में सक्षम हो सकें।

कांग्रेस ने इस आंदोलन का समर्थन किया और गांधी जी ने इसे असहयोग आंदोलन के साथ मिलाने की कोशिश की। गांधी जी ने यह आशा की थी कि असहयोग को खिलाफत के साथ मिलाने से भारत के दो प्रमुख ध्रुवीकरण समुदाय—हिंदू और मुसलमान—एक साथ मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे। इन आंदोलनों ने निश्चय ही एक लोकप्रिय कार्रवाही का बहाव उन्मुक्त कर दिया था, और ये चीजें औपनिवेशिक भारत में बिलकुल अभूतपूर्व थीं। विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में जाना छोड़ दिया, वकीलों ने अदालतों में जाने से मना कर दिया। कई कस्बों और नगरों में श्रमिक वर्ग हड़ताल पर चला गया। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 1921 में 396 हड़तालें हुईं, जिनमें 6 लाख श्रमिक शामिल थे और इससे 70 लाख कार्यदिवसों का नुकसान हुआ था। देहात में भी असंतोष बढ़ रहा था। उत्तरी आंध्र की पहाड़ी जनजातियों ने वन्य कानूनों की अवहेलना की, अवध के किसानों ने कर नहीं चुकाए, और पंजाब के किसानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों का सामान ढोने से मना कर दिया। इन विरोध आंदोलनों को कभी-कभी स्थानीय राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवज्ञा करते हुए कार्यान्वित किया गया। किसानों, श्रमिकों और अन्य लोगों ने इसे अपने ढंग से व्याख्यायित किया और औपनिवेशिक शासन के साथ 'असहयोग' के लिए ऊपर से प्राप्त निर्देशों पर टेढ़े रहने के बजाय अपने हितों से मेल खाते तरीकों का इस्तेमाल किया।

महात्मा गांधी के अमेरिकी जीवनी-लेखक लुई फिशर ने लिखा है कि 'असहयोग भारत और गांधी जी के जीवन का एक युग बन गया। असहयोग शांति की दृष्टि से नकारात्मक था, लेकिन प्रभाव की दृष्टि से बहुत सकारात्मक था। इसके लिए प्रतिवाद, परित्याग और स्व-अनुशासन आवश्यक थे। यह स्वशासन के लिए एक प्रशिक्षण था।' 1857 के विद्रोह के बाद पहली बार असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेजी राज की नींव हिल गई।

फरवरी 1922 में किसानों के एक समूह ने संयुक्त प्रांत के चौरी-चौरा में एक पुलिस स्टेशन पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। इस अग्निकांड में कई पुलिस वालों की जान चली गई। हिंसा की इस घटना से गांधी जी को यह आंदोलन तत्काल वापस लेना पड़ा। उन्होंने शोर मचाया कि, 'किसी भी तरह की उत्तेजना को निहत्थे और एक तरह से भीड़ की दया पर निर्भर व्यक्तियों की घृणित हत्या के आधार पर उचित नहीं ठहराया जा सकता है।'

असहयोग आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया। स्वयं गांधी जी को मार्च 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर जांच की कार्यवाही की अध्यक्षता करने वाले जज जस्टिस सी. एन. ब्रोम्पफील्ड ने उन्हें सजा सुनाते हुए एक महत्वपूर्ण भाषण दिया। जज ने टिप्पणी की कि, "इस तथ्य को नकारना असंभव होगा कि मैंने जिनकी जांच की है, या करूंगा, आप उनसे भिन्न श्रेणी के हैं। इस तथ्य को नकारना असंभव होगा कि आप लाखों देशवासियों की दृष्टि में एक महान देशभक्त और नेता हैं। यहाँ तक कि राजनीति में जो लोग आपसे भिन्न मत रखते हैं, वे भी आपको उच्च आदर्शों और पवित्र जीवन वाले व्यक्ति के रूप में देखते हैं।" चूँकि गांधी जी ने कानून की अवहेलना की थी, इसलिए उस न्याय पीठ के लिए गांधी जी को 6 वर्षों की जेल की सजा सुनाना आवश्यक था। लेकिन जज ब्रोम्पफील्ड ने कहा कि, "यदि भारत में घट रही घटनाओं के कारण सरकार के लिए सजा में कमी और आपको मुक्त करना संभव हो गया तो इससे मुझसे ज्यादा कोई प्रसन्न नहीं होगा।

निष्कर्ष:

महात्मा गांधी का अहिंसात्मक आंदोलन और क्रांतिकारियों के हिंसक संघर्ष दोनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को आकार दिया। गांधी का अहिंसात्मक आंदोलन समाज को एकजुट करने और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करने का प्रयास था, जबकि हिंसक संघर्षों ने ब्रिटिश साम्राज्य को वास्तविक खतरे का अहसास दिलाया। दोनों आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और भारतीय राजनीति और समाज में गहरे प्रभाव छोड़े।

संदर्भ सूची

1. चंद्र, बिपिन। (1989)। *भारत की स्वतंत्रता संग्राम*। न्यू दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया। (पृष्ठ संख्या: 315-345)
2. सिंह, के.के। (2001)। *भारत में क्रांतिकारी आंदोलन*। न्यू दिल्ली: विकास पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 60-83)
3. गांधी, महात्मा। (1960)। *मेरे प्रयोगों की कहानी*। अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस। (पृष्ठ संख्या: 56-89)
4. सिंह, अ. (1999)। *चंद्रशेखर आज़ाद: एक क्रांतिकारी नेता*। न्यू दिल्ली: हार-अनंद पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 45-71)
5. राघवन, वी। (2008)। *भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और स्वतंत्रता संग्राम*। न्यू दिल्ली: एस. चंद पब्लिकेशिंग। (पृष्ठ संख्या: 212-250)
6. गुप्ता, एस. आर। (1979)। *गांधी और उनके आलोचक*। दिल्ली: मैकमिलन इंडिया। (पृष्ठ संख्या: 78-103)
7. राघवन, वी। (2008)। *भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और स्वतंत्रता संग्राम*। न्यू दिल्ली: एस. चंद पब्लिशिंग। (पृष्ठ संख्या: 212-250)
8. शर्मा , र.प। (2005)। *भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों का योगदान*। जयपुर: पब्लिकेशन हाउस। (पृष्ठ संख्या: 198-213)
9. गुप्ता, एस. आर। (1979)। *गांधी और उनके आलोचक*। दिल्ली: मैकमिलन इंडिया। (पृष्ठ संख्या: 78-103)
10. बोस, सुभाष चंद्र। (1944)। *भारतीय राष्ट्रीय सेना*। न्यू यॉर्क: हार्पर एंड रो। (पृष्ठ संख्या: 110-145)
11. वर्मा, प। (1988)। *भारतीय क्रांतिकारी और स्वतंत्रता संग्राम*। न्यू दिल्ली: राजकमल प्रकाशन। (पृष्ठ संख्या: 91-121)
12. नारायण, र। (1992)। *भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों का उदय*। लखनऊ: प्रकाशन। (पृष्ठ संख्या: 98-115)
13. सेठी, र। (2002)। *अहिंसा और सशस्त्र संघर्ष: ऐतिहासिक दृष्टिकोण*। कोलकाता: अनन्या पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 134-150)
14. मेहरा, रजनीश। (1997)। *भगत सिंह का जीवन और उनके विचार*। इलाहाबाद: हिंदी प्रकाशन। (पृष्ठ संख्या: 45-70)
15. आचार्य, रामनाथ। (1980)। *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन*। जयपुर: शंकर पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 123-140)
16. शर्मा, जयंती। (2004)। *भगत सिंह और उनका आंदोलन*। मुंबई: स्पार्क पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 92-115)
17. सिंह, दलजीत। (1996)। *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सशस्त्र क्रांति*। चंडीगढ़: अर्नव पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 134-150)
18. चंद्र, बिपिन। (1989)। *भारत की स्वतंत्रता संग्राम*। न्यू दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया। (पृष्ठ संख्या: 315-345)
19. सिंह, के.के। (2001)। *भारत में क्रांतिकारी आंदोलन*। न्यू दिल्ली: विकास पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 60-83)
20. सिंह, अ। (1999)। *चंद्रशेखर आज़ाद: एक क्रांतिकारी नेता*। न्यू दिल्ली: हार-अनंद पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 45-71)
21. राघवन, वी। (2008)। *भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और स्वतंत्रता संग्राम*। न्यू दिल्ली: एस. चंद पब्लिशिंग। (पृष्ठ संख्या: 212-250)
22. गुप्ता, एस. आर। (1979)। *गांधी और उनके आलोचक*। दिल्ली: मैकमिलन इंडिया। (पृष्ठ संख्या: 78-103)
23. नारायण, र। (1992)। *भारत में क्रांतिकारी आंदोलनों का उदय*। लखनऊ: प्रकाशन। (पृष्ठ संख्या: 98-115)
24. सिंह, के.के। (2001)। *भारत में क्रांतिकारी आंदोलन*। न्यू दिल्ली: विकास पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 60-83)
25. सिंह, अ। (1999)। *चंद्रशेखर आज़ाद: एक क्रांतिकारी नेता*। न्यू दिल्ली: हार-अनंद पब्लिकेशन्स। (पृष्ठ संख्या: 45-71)
26. गांधी, महात्मा। (1960)। *मेरे प्रयोगों की कहानी*। अहमदाबाद: नवजीवन पब्लिशिंग हाउस। (पृष्ठ संख्या: 56-89)
27. चंद्रा, बिपिन। (1989)। *भारत की स्वतंत्रता संग्राम*। न्यू दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया। (पृष्ठ संख्या: 315-345)
28. D:\Textbooks\Rationalised Books\12126 — Bhartiya Itihas ke Kuch Vishay Part-III\1 Source Files\Chapter-11\chapter-11.pmd